।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़

दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

विवेक धर्म है – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 24 जनवरी : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि बुद्धि और विवेक दोनों शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। आज बौद्धिक विकास बहुत हो रहा है। पर बुद्धि से बड़ा विवेक है। हम प्रयत्न करें कि विवेक चेतना का विकास हो । विवेक बहुत बड़ी शक्ति है, धर्म है।

वे कस्बे के तेरापंथ भवन स्थित प्रज्ञासमवसरण में धर्म सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होनें कहा कि विवेक से ही हम धर्म की आराधना करते है और सत्य की साधना करते है। आज आई क्यू पर ध्यान दिया जाता है पर विवेक का मानदण्ड नहीं किया जाता । विवेक से हम अपनी वृतियों पर नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं जिसकी विवेक चेतना जागृत नही है, वह अपनी कमियों को दूर नहीं कर सकता । आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी विज्डम वर्ल्ड की चर्चा करते हुए कहा कि प्रज्ञा, प्रतिभा, धृति और विवेक चेतना के जागरण का प्रशिक्षण विज्डम् वर्ल्ड में दिया जायेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सराग और वीतराग दो तरह के मुनष्य होते हैं। मोहमाया से ग्रस्त सराग होता है। जो राग–द्वेष से छूटकारा पा लेता है वह वीतराग बन जाता है। वीतराग बनने की साधना साधु करते हैं। साधु अभय दाता पुरुष होते है। जो शांत होता है वह संत होता है। साधु न किसी को भयभीत करते हैं और न ही भयभीत होते हैं। भय यथार्थ की साधना में बाधक है। संत वह होता है जिनका क्रोध अहंकार मर जाता है।

सादर प्रकाशनार्थ : –
श्री प्रमोद जी घोड़ावत
सम्पादक, तेरापंथ टाईम्स
नई दिल्ली

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक